गाँव देस की बात

तुम खुदा ही सही हमारे किस काम के !

रामजी यादव

तुम खुदा ही सही हमारे किस काम के!

रामजी यादव

अपर्णा के लिए

अनुक्रम

सवा अरब का झूठ और राजनीति के चोर दरवाजे	4
कालेधन की नाव पर सवार मोदी और बेजुबान शहादतें	8
बेचारे किसान और गैस सिलेंडर वाली उज्ज्वलाएँ	15
महंगी खेती, मरते किसान और मुनाफे में कॉर्पोरेट	20
वो दिन कि जिसका वादा है....	28
आखिर हम किसकी लड़ाई लड़ रहे हैं?....	36
तुम खुदा ही सही, हमारे किस काम के!	45
तुम्हारे सवाल कहाँ मर गए हैं लोगों!	54
ओ लोकतंत्र के मगरमच्छ!	65
राजा की सेहत और किसान की कमीज	74
आतंकवाद की बचकानी व्याख्या खतरनाक होती है	86
जहाँ सोच ही शौचालय बन गया है!	97
ज्वालामुखी पर खड़ा है सहारनपुर	101
अभिव्यक्ति और यथार्थ के बीच आजादी का तराना	108
मेरे जीवन में बुद्ध की अहमियत	113
कुरुक्षेत्र में गाय का दूध, हिंदुत्व और ज्योतिसर का ज्ञान	118
बनारस में पगलाने का समय और सिनेमा	124
सिक्का बदल रहा है	130

सवा अरब का झूठ और राजनीति के चोर दरवाजे

इधर रेल यात्राओं में मैंने गौर किया कि दैनिक यात्रियों की भीड़ लगभग हमेशा ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस वायदे पर जबरदस्त बहसें कर डालती है कि देश के हरेक आदमी के खाते में पंद्रह-पंद्रह लाख रुपए कब आयेंगे? आयेंगे भी कि केवल मोदी ने लोगों को धोखा दिया है? असली बहस इसके बाद ही शुरू होती है क्योंकि एक पक्ष पूरी आक्रामकता से आने को लेकर अपनी आश्वस्ति के सारे तर्क देता है तो दूसरा न आने की बात पर अड़ा हुआ नरेंद्र मोदी को लबार और झूठा साबित करने पर तुल जाता है यह ऐसी बहस होती है जिसमें हंसी-ठट्ठा, गुस्सा-गर्मी सबकुछ होता है। एक पक्ष नरेंद्र मोदी को ऐसा प्रधानमंत्री बताता है जो पहले कभी नहीं हुआ था तो दूसरा पक्ष कहता है कि सही है। और किसी प्रधानमंत्री के दामन पर अपने राज्य की निरीह जनता के खून के दाग नहीं लगे थे। क्या यह गलत बात है? थोड़ी देर बगलें झाँकने के बाद पहला पक्ष मन की बात कहने लगता है। हिंदू राष्ट्र की बात करता है और यह सवाल उठाता है कि क्या भारत में कोई दूसरा प्रधानमंत्री हुआ है जिसने पूरी दुनिया में भारत का नाम इतना ऊँचा उठाया हो। पहला भी कुछ देर चुप रह जाता है लेकिन फिर उसके सवाल खड़े हो जाते हैं कि कोई और प्रधानमंत्री है जिसने देश की जनता का धन पानी की तरह विदेश यात्राओं में बहाया हो? दूसरा पक्ष एकदम चुप और पहला पक्ष फिर सवाल दागता है - है कोई और प्रधानमंत्री जो जनता का सेवक बनने का दावा करता हो और दस लाख का सूट पहनता हो? है कोई प्रधानमंत्री जो दलितों को गोरक्षा के नाम पर पीटने वाले गुंडों और हत्यारों को गिरफ्तार करने की बजाय उनसे कहता हो कि भले ही मुझे गोली मार दो लेकिन दलित भाइयों को छोड़ दो। है कोई दूसरा प्रधानमंत्री जो देश की सुरक्षा का सर्वाधिक लाभ उठाने के बावजूद उसका इतना बड़ा अपमान करता हो? है कोई प्रधानमंत्री जिसकी दो-दो जन्मतिथियाँ हों? है कोई दूसरा प्रधानमंत्री जिसने बीस साल पहले टीवी पर इंटरव्यू में अपने को पांचवीं पास बताते हुए कहा कि मैंने सत्रह साल की उम्र में घर छोड़ दिया था और सबकुछ स्वाध्याय से सीखा लेकिन प्रधानमंत्री बनते ही जिसने अपने लिए फर्जी डिग्री का इंतजाम किया हो? बोलिए, है कोई प्रधानमंत्री जिसने चाय बेचने वाले का बेटा बनकर जनता को भावनात्मक रूप से बेवकूफ बनाया हो और फिर श्रम कानूनों को पूंजीपतियों के पक्ष में कमजोर बनाया हो और देहाती कुलक-

किसानों के पक्ष में मनरेगा पर कुठाराघात किया हो? है कोई दूसरा प्रधानमंत्री जो विज्ञान और टेक्नोलॉजी के इस युग में विदेशों में इस बात का दावा करता हो कि मुझे लगता है दुनिया की पहली प्लास्टिक सर्जरी माता पार्वती और भगवान शिव ने की थी जिसमें माथा हाथी का और शरीर इंसान का लगा था? है कोई प्रधानमंत्री जिसके ऐसे मूर्खतापूर्ण वक्तव्यों पर दुनिया दिल खोल कर हंसी हो? इन सवालों की बौछार के बीच एक देहाती स्वर उभरता है - भैया, है कोई प्रधानमंत्री जिसके राज में दाल दो सौ रुपया किलो हुई हो?

इतने सारे सवालों से घिरे दूसरे पक्ष के पास अब गलथेथरई का भी उत्साह न दीखता। जबकि आस-पास बैठे यात्रियों के मन में सवाल कुलबुलाने लगते। मोदी जी की जो माया संचार माध्यमों ने फैलाई है और उनके समर्थक उनकी महत्ता का जो तम्बू तानते रहते हैं, उसमें बेरहमी से सुराख करते ये सवाल लगातार उठते हैं और किसी के पास कोई जवाब नहीं होता है। देश ने पहली बार ही कोई इतना आत्ममुग्ध प्रधानमंत्री देखा है जिसके चापलूस फोटोशॉप का इस्तेमाल करके उफनते हुए बरसाती झरने में उसका चेहरा बना देते हैं। ऐसे चमत्कारों की कमी नहीं है। शहर दर शहर ऐसे होर्डिंग्स मिल जायेंगे जिसमें ईश्वर की तरह मोदी की हथेली से प्रकाशपुंज निकलकर मेक इन इंडिया रूपी शेर पर पड़ रहा है। आखिर इन सबका क्या अर्थ है?

कौशल विकास और मेक इन इंडिया दरअसल एक ऐसा झांसा है जो बेरोजगारी और गरीबी से बदहाल भारत में बहुत आसानी से खप जाता है और लोग लंबे समय तक इस भ्रम में पड़े रह सकते हैं कि देश का विकास हो रहा है। देश बदल रहा है लेकिन कहाँ बदल रहा है इसे बहुत देर बाद समझ पाते हैं। शायद इसलिए भी कि मोदी ने औरों की तुलना में लोगों को बेहोश करने की ज्यादा प्रभावी जड़ी खोज ली है - मेरे देश की सवा अरब जनता!

यह एक ऐसा झूठ है जिसे आसानी से पचा पाना किसी भी संवेदनशील और समझदार व्यक्ति के लिए बहुत मुश्किल है। इस सवा अरब में टाटा, बिड़ला, अडानी, अंबानी, सिंघानियाँ, बजाज, मित्तल भी हैं और तथाकथित गो-रक्षक भी। इस सवा अरब में गुजरात में सरेआम पीटे जाते दलित भी हैं और दादरी में मारा गया इखलाक भी। इस सवा अरब में करोड़ों की संख्या में वह ग्रामीण जनता भी है जो मनरेगा द्वारा तय मानदंडों पर मजदूरी मांगती है और न मिलने पर दूसरी जगहों पर काम खोजती है तो कुलक-किसान उसे कामचोर मानते हैं

और मोदी कुलक-किसानों के हक में मनरेगा की समीक्षा करने और उसे खत्म करने के प्रावधान करने लगते हैं। इस सवा अरब में एफसीआई के हजारों गोदामों में कार्यरत लाखों श्रमिक हैं जिन्हें हटाकर एफसीआई को निजी हाथों में देने की जुगत चल रही है ताकि आगे वहां ठेकेदारी प्रथा कायम की जा सके। इस सवा अरब में वे गरीब मुसलमान हैं जो केवल धर्म के आधार पर आतंकवादी कहकर मार दिए गए अथवा जेलों में बंद किये जाते हैं। इस सवा अरब में देश के वे आदिवासी हैं जिन्हें कॉर्पोरेट घरानों को स्थापित करने के लिए बेरहमी से उजाड़ा और विस्थापित किया जा रहा है। इस सवा अरब में पॉलिश और वीभत्सता एक दूसरे के समानांतर हैं लेकिन नरेंद्र मोदी और कॉर्पोरेट मीडिया ने इसे बहुत खूबसूरत धोखा बना दिया है। असलियत यह है कि मोदीकाल में बहुत सारे घोटालों/षड्यंत्रों और गुल-गपाड़े को सवा अरब जनता के संबोधन में छिपाने की कोशिश की जा रही है लेकिन यथार्थ की धोती खुल-खुल जा रही है।

यह जुमला बहुत रोचक लगता है कि आप इस देश की सवा अरब जनता से मुखातिब हैं। लगता है गोया सवा अरब लोगों का कोई परिवार है और उसका कोई एक मुखिया है जो जब चाहे किसी को आदेश दे दे, डांट दे, पुचकार दे, उसके दुःख सुन ले और उसका दुःख दूर कर दे। लेकिन इस परिवार की वास्तविकता क्या है इसे बड़ी आसानी से छिपा दे।

सवा अरब जुमले की आड़ में मोदी ने अपने ढाई साल के कार्यकाल में सबसे अधिक नुकसान गाँवों को पहुँचाने में का प्रयास किया है। एक तरह से गाँवों को उन्होंने कार्पोरेट का उपनिवेश बना दिया है। इसका पहला कदम भूमि अधिग्रहण कानून को सेज और पूंजीपति घरानों के अधिक अनुकूल बनाना था। इस कानून से कार्पोरेट की जवाबदेही कम करने का पूरा प्रावधान किया गया था और किसानों को पूरी तरह पंगु और लाचार। असल में एक लोकप्रिय बनाए जाते और चमत्कारों के मुलम्मों से चमकाए जाते चेहरे के पीछे शातिर दिमाग ने अपने आकाओं के विस्तारवादी आकांक्षाओं की सड़क बनाने में भावुकता था। ऐसा अलकतरा लगाया है कि उस पर झूठ का जहाज उड़ाना आसान हो गया है। दाल के दाम के अभूतपूर्व उछाल के बरक्स कृषि-संकट और दलहन के कम उत्पादन का झूठ भी बहुत आसानी से बोला गया लेकिन पता नहीं कहाँ से लोग सूचना निकालकर ला रहे हैं कि लाखों टन दालें अडानी की गोदामों में पड़ी हुई हैं। इस प्रकार बहुत सी ऐसी बातें हैं जो जुमलों में आसानी